सुअर की नापाकी से पवित्रता की विधि

﴿ كيفية التطهر من نجاسة الخنزير ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندي]

मुहम्मद सालेह अल-मुनज्जिद

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2009 - 1430

islamhouse.com

﴿ كيفية التطهر من نجاسة الخنزير ﴾

« باللغة الهندية »

محمد صالح المنجد

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2009 - 1430

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

सुअर की नापाकी से पवित्रता की विधि

प्रश्न :

जब मैं छोटी थी तो मैं ने अपने परिवार वालों के साथ विदेश का सफर किया, यात्रा के दौरान हमें सुअर तत्व युक्त बिस्कुट दिया गया। जब मेरी मां को इसका पता चला तो उन्हों ने हमें खाने से रोक दिया। जैसाकि मुझे याद आ रहा है कि हम ने अपने हाथ और मुँह पानी और मिट्टी से (एक बार मिट्टी समेंत सात बार) नहीं धुले थे, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है कि जब कोई व्यक्ति सुअर या उसका कोई भाग छू लेने पर करे। कुछ वर्षों के बाद मैं अपने देश से बाहर थी और गलती से पोर्क खा लिया और अपने मुँह को पानी और मिट्टी से नहीं धोया। ये दोनों मामले कुछ वर्षों पहले पेश आये थे। मेरे मुँह या हाथ पर सुअर का कोई प्रभाव, स्वाद, या गंध या रंग बाक़ी नहीं था, तो क्या अब ज़रूरी है कि हम उन्हें धुल लें? मुझे भय है कि इन दोनो मामलों के कारण अल्लाह हमारी नमाज़ को नहीं करेगा। कृप्या इसका स्पष्टीकरण करें।

उत्तर :

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है।

बिना जाने-बूझे (अनजाने में) सुअर का मांस खा लेने में आप पर कोई गुनाह नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

"तुम से भूल चूक में जो कुछ हो जाए उसमें तुम्हारे ऊपर कोई पाप नहीं, किन्तु पाप वह है जिसका तुम हृदय से इरादा करो।" (सूरतुल अहज़ाबः ५)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का फरमान है :

"अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत से गलती, भूल-चूक और जिस पर वह बाध्य (मजबूर) किए गए हों, क्षमा कर दिया है।" (इब्ने माजा हदीस नं.: २०४३, अल्बानी ने इसे सहीह कहा है)

मुसलमान जो कुछ भी खाता पीता है उसमें उसे सावधानी, सतर्कता और एहतियात से काम लेना चाहिए विशेष कर जब वह गैर-इस्लामी देश में हो, जहाँ के लोग अशुद्ध और अपवित्र चीजें खाते हैं।

जहाँ तक सुअर की नापाकी से पवित्रता हासिल करने की विधि का प्रश्न है, तो कुछ धर्मशास्त्री इस बात की ओर गए हैं कि कुत्ता पर क़ियास करते (अनुमान लगाते) हुए उसे सात बार धोया जायेगा, जिनमें एक बार मिट्टी से होगा।

लेकिन सहीह बात यह है कि सुअर की नापाकी में एक बार ही धुल लेना पर्याप्त है, इमाम नववी रहिमहुल्लाह मुस्लिम की शरह में कहते हैं : (अधिकतर उलमा इस बात की ओर गए हैं कि सुअर को सात बार धुलने की आवश्यकता नहीं है, और यही इमाम शाफेई का मत है, और प्रमाण में यही मज़बूत है।)

शैख उसैमीन रहिमहुल्लाह ने इसी को राजेह (उचित) ठहराया है, जैसाकि वह अश्शरहुल मुम्ते' (१/४६५) में कहते हैं :

((फुक़हा रहिमहुमुल्लाह ने सुअर की नापाकी को कुत्ते की नापाकी से संबंधित किया है क्योंकि यह कुत्ते से भी अधिक अशुद्ध और गंदा होता है, अतः यह इस हुक्म के अधिक योग्य है।

लेकिन यह एक कमज़ोर क़ियास है, क्योंकि सुअर का वर्णन क़ुरआन में हुआ है, तथा यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय काल में भी मौजूद था, और कहीं भी उसे कुत्ते से संबंधित किए जाने का उल्लेख नही किया गया है। अतः सहीह यही है

कि उसकी नापाकी उसके अतिरिक्त अन्य चीज़ों की नापाकी के समान है, अतः जिस प्रकार दूसरी नापाक चीज़ों को धोया जाता है उसी के समान इसे भी धोया जायेगा।))

सहीह बात यह है कि अन्य दूसरी नापाकियों के धुलने के विषय में केवल इतना काफी है कि नापाकी दूर हो जाये, इसके लिए किसी निश्चित संख्या की शर्त नहीं है।

सुअर छूने से पवित्रता हासिल करने की विधि के बारे में जो भी कथन (मत) हो, लेकिन अब आप लोगों पर अपने शरीर का कुछ भी भाग धुलना ज़रूरी नहीं है, और न ही इसका आप की नमाज़ पर कोई प्रभाव ही है।

और अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रखने वाला है।

इस्लाम प्रश्न एंव उत्तर